Special Issue, March 2019

International Multilingual Refereed Research Journal

AH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Indian Council And Social Science Research

(Western Regional Center,Mumbai)
And

Jeevandeep Shaikshanik Sanstha
Arts, Commerce & Science College, Khardi

Tq.Shahapur, Dist.Thane.
(Affiliated to Mumbai University)

Organized

Two Day's Interdisciplinary National Conference on

Impact of Globalisation on Indian Tribal Community

On Dated : **01 & 02 March, 2019**

Organized By
Jeevandeep Shaikshanik Sanstha
Arts, Commerce & Science College, Khardi,
Shahapur,Dist-Thane- 421601

Prof. D.M.Bhutale
Convener

Prof.K.R. Kalkate
I/C. Principal

Scanned with CamScanner

25) जागतिकीकरणात आदिवासींचे स्थान
प्रा. संदिप भागु चपटे, शिवळे मुरबाड ||100

26) जागतिकीकरणाचा ठाणे जिल्हयातील आदिवासी जमातींवरील परिणाम
प्रा. लालचंद्र आर. संते, जि. ठाणे ||103

27) जागतिकीकरणाची संकल्पना
डॉ. सिध्देश्वर सटाले, गेवराई ||106

28) जागतिकीकरणाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम
प्रा. आर. जी. शेवलीकर, धर्माबाद ||108

29) जागतिकीकरण आणि भारतातील आदिवासी समुदयाचे आर्थिक जीवन
डॉ. विकास विठठ्ल शेवाळे, पुणे ||111

30) पालघर जिल्ह्यातील पर्यटन स्थळांचा जागतिकीकरणाच्या दृष्टीने केलेला अभ्यास
प्रा. सोमनाथ अंकुश नवले, जि. ठाणे ||117

31) आदिवासी समुदायावर जागतिकीकरणाचे झालेले परिणाम—एक समाजशास्त्रीय ...
डॉ. दत्ता एम. तंगलवाड, जि.बीड ||121

32) जागतिकरणाचा भारतीय आदिवासी संस्कृतीवर झालेला परिणाम:एक आभ्यास
—संध्या रूस्तुम येवले, पुणे ||125

33) जागतिकीकरण आणि आदिवासी समाज
प्रा.डॉ. माधव केरबा वाघमारे, जि. जळगाव ||127

34) संजीव के उपन्यासों में चित्रित औद्योगीकरण से प्रताड़ित आदिवासी समाज
डॉ. भीमराव रामकिशन घोडगे ||129

35) अनुज लुगुन की कविता में आदिवासी विमर्श (लम्बी कविता - 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के विशेष ...
संतोष नागरे, जि. बीड ||132

36) हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श
प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम, बीड ||135

37) FLUVIAL ASSESSMENT OF THE BEDROCK INCISION IN THE DEVELOPMENT PO...
Mr. K. Pawar, Dr. A. Jethe, Dr. S. Gaikwad, Prof. M. Ayub & Dr. K. C. Mohite ||137

http://www.printingarea.blogspot.com —www.vidyawarta.com/03

Scanned with CamScanner

35

अनुज लुगुन की कविता में आदिवासी विमर्श

(लम्बी कविता - 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के विशेष संदर्भ में)

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिंन्दी विभाग,
र.भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई, जि. बीड

****

अनुज लुगुन समकालीन हिंदी कविता के शीर्षस्थ युवा कवि हैं। आपकी कविताओं के केंद्र में मुण्डा आदिवासी समाज है। 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' आपके व्दारा लिखी गयी लम्बी कविता है। जिसके तीन खण्ड हैं - बाघ, सुगना मुण्डा और सुगना मुण्डा की बेटी। बाघ मनुष्य की अतिरिक्त लालसा, सुगना मुण्डा आदिवासियों की सहजीविता तथा बिरसी स्त्री शक्ति एवं मुक्ति कामी चेतना की प्रतीक है। अनुज लुगुन 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के माध्यम से धर्मसत्ता, राजसत्ता, साम्राज्यवादी सत्ता, सामंती सत्ता, पूँजीवादी सत्ता तथा पितृसत्ता के हमलों की शिकार आदिवासियों की व्यथा-कथा को बयान करते हुए उनकी शोषण मुक्ति के लिए आवाज उठाते हैं। रविभूषण इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, "अनुज लुगुन की कविता 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' समकालीन हिंदी कविता की एक बडी उपलब्धि है। यह मुक्ति की आकांक्षा की एक बडी कविता है। इस कविता में इतिहास लेखन की मुख्यधारा पर सभ्यता के विकास पर प्रश्न है, मुण्डा समाज और आदिवासी समाज के साथ यह उनमें सीमित न रहकर विश्व की एक परिक्रमा करती है, पूँजी और लालसा - लिप्सा पर प्रहार करती है, एक नये समाज और समाज की रचना कर सार्थक प्रयत्न करती है, यथार्थ को उसकी समग्रता में देखकर उसे बदलने की महत्ती आकांक्षा रखती है, बाह्य शत्रु के साथ आन्तरिक शत्रु की सही पहचान करती है, एक नये मानक की रचना करती है, संघर्ष के सौंदर्य का विकास करती है। अतीत की स्मृति, वर्तमान का यथार्थ और भविष्य का स्वप्न और उसकी कल्पना सब एक साथ समग्र रुप में यहाँ मौजूद है।"[१]

१. बाघ :-

प्रथम खण्ड ' बाघ' में कवि अनुज लुगुन ने अतिरिक्त लालसा से जन्मे तथा राजधानी में रहने वाले हिंस्र अप्राकृत बाघ का चित्रण किया है। यह बाघ नरभक्षी होने से प्राकृतिक बाघों से अधिक खतरनाक है। रविभूषण ठीक ही कहते हैं, "यहाँ बाघ के जन्म को अतिरिक्त की लालसा से जोडा गया है। अतिरिक्त की इस लालसा के कारण ही "उलट्बग्धों की संख्या बढी है" और सहजीवी बाघ विलुप्त हुए है। कविता में " प्राकृत बाघ" के बजाय 'अप्राकृत बाघ' से अधिक चिन्ता है, क्योंकि वह हमारे भीतर है, समाज और समुदाय के भीतर। यह अप्राकृत बाघ सामान्य और प्राकृत बाघ की तुलना में कहीं अधिक चालाक और खतरनाक है।"[२] प्राकृतिक संसाधनों पर हमला कर इन बाघों ने आदिवासियों के अस्तित्व पर ही कुठराघात किया है। अनुज लुगुन आदिवासियों के अस्तित्व को मिटानेवाले सभ्यता एवं सत्ता के उद्घोषकों की पोल खोलते हुए कहते हैं,-

" उसकी जमीन / उसके जंगल / उसकी नदियाँ
उसकी आजादी / उसका सम्मान/ सब खतरे में है।"[३]

प्रस्तुत खण्ड में अनुज लुगुन ने अप्राकृत बाघों से आदिवासियों के जीवन में उत्पन्न खतरों की ओर संकेत किया है।

२. सुगना मुण्डा :-

व्दितीय खण्ड में जंगल के पूर्वज सुगना मुण्डा तथा सुगना मुण्डा के पूर्वज जंगल की परस्पर पूरकता का चित्रण है। सुगना मुण्डा स्त्री - पुरुष समानता तथा सहजीविता के पक्षधर है। "वह एक व्यक्ति, एक चरित्र न होकर उन सभी आदिवासियों का प्रतिक है, जिसका पेडों, पत्थरों, पर कहीं अधिक विश्वास था, पृथ्वी पर भरोसा था।"[४] सुगना मुण्डा धरती के आबा बिरसा मुण्डा तथा बिरसी के पिता है। जो जंगल और आदिवासी को एक दूसरे का पर्याय मानते हैं। जंगल सहजीविता का दर्शन है। आदिवासियों का अस्तित्व जंगल पर निर्भर होने से वे उसके रक्षक हैं,अत उन्हे ' जंगल के दावेदार' भी कहा जाता है। साम्राज्यवादी, सामंतवादी, पूँजीवादी सत्ता के बाघ जंगल में घुसपैठ कर उसे उजाड़ रहे हैं। इसीकारण आज जंगल दुनिया भर की सत्ताओं का प्रतिपक्ष है। सुगना मुण्डा अपनी बेटी बिरसी को समझते हुए कहते है,-

"बिरसी जंगल के पूर्वज
कभी - भी प्राकृत बाघ के दुश्मन नहीं रहे हैं'
हम जंगल के पूर्वज रहे हैं / और जंगल हमारा पूर्वज है
जंगल केवल जंगल नहीं है / नहीं है वह केवल दृश्य
वह तो एक दर्शन है / पक्षधर है वह सहजीविता का
दुनिया भर की सत्ताओं का प्रतिपक्ष है वह ।"[५]

३. सुगना मुण्डा की बेटी :-

तृतीय खण्ड 'सुगना मुण्डा की बेटी' चार भागों में विभाजित हैं। बिरसी काल्पनिक पात्र है, जो कवि की रचना - धर्मिता की प्रतिक

Scanned with CamScanner

है। प्रथम भाग में रीड़ा हड़म और बिरसी के बीच अप्राकृत बाघों की जंगल में घुसपैठ, आदिवासियों के विस्थापन और नक्सलवादी बनने की विवशता को लेकर मुक्त चिंतन है। बिरसी हजारों वर्षो की श्रमशील मातृसत्तात्मक व्यवस्था की प्रतीक है। "यह स्त्री शक्ति है, मातृशक्ति। बिरसी 'आदिवासी गणतंत्र की प्रहरिका', 'पितृसत्ता के विरुध्द', 'मातृसत्ता के मजबूत अवशेष', ' सभ्यता की समीक्षक', 'सत्ताओं के प्रतिपक्ष की वाहिका', 'नये सौंदर्य की आवाहिका' है।"[६] अतःवह अप्राकृत बाघों से जंगल को उजाड़ने से बचाना चाहती है। वैश्वीकरण से उपजी विश्वग्राम की उपभोक्तावादी संस्कृति रोड़-रोलर की तरह आदिवासियों को कुचलती जा रही है। इस क्रूर व्यवस्था ने मासूम बच्चों और निरपराध महिलाओं पर जानवरों सा हमला किया। चौपाया बाघों से यह अप्राकृत बाघ खूँखार हैं। इनके हमलों से जंगल मे आग लगी हुई है। अब हर तरफ आग है, धुँआ और चीखें हैं। गोलियों और विस्फोट के धमाकों ने जंगल की शांतता को अराजकता में बदल दिया। अनुज लुगुन विश्वग्राम के क्रूर चेहरे को बेनकाब करते हुए कहते है,- "आज की आदिवासी दुनिया को वैश्वीकरण ने सबसे अधिक धक्का पहुँचाया है। आज के अस्मिता मूलक विमर्श में आदिवासी स्वर ऐसा है जो एक साथ नवसाम्राज्यवाद के विरुध्द भी है और अस्मिता- अस्तित्व के लिए भी संघर्षरत है।"[७] महामारी की तरह आदिवासियों के जंगल में पसरी साम्राज्यवादी, सामंतवादी, पूँजीवादी सत्ता, धर्मसत्ता, पितृसत्ता ने आदिवासी जीवन को तहस-नहस किया। रीड़ा हड़म बिरसी को अप्राकृत बाघों के हमलों से नष्ट हुई आदिवासियों की सभ्यता एवं संस्कृति के बारे में बताते हैं,-

"हाँ बिरसी /जब तक हमारी दुनिया
एक व्दीप की तरह थी / तब तक समता थी
हमारे गीत अखाड़े / सबके लिए बराबर थे
तुम्हारे लिए गितिः ओडाः था
धुमकुडिया था, पेल्लो एड्पा था, घोटुल था
लेकिन जब से हमारी दुनिया में
घुसने लगी हैं सागर की बेख़ौफ लहरे
उसके सत्तात्मक विषाणु हमारे बीच फैलने लगे हैं
कहीं पितृसत्ता, तो कहीं सामन्ती सत्ता
कहीं धर्म की सत्ता तो कहीं पूँजी की सत्ता है
सम्पत्ति का वैभव और उसकी लालसा
मेहनत और उपज के
सामूहिक खून - पसीनों के बीच भी
महामारी की तरह पसर रही है।"[८]

अतः इस शोषण के विरुध्द आदिवासियों ने भूमकाल,मानगढ में उलगुलान किया। इसे व्यवस्था के पक्षधरों ने जंगली लोगों का अराजक उपद्रव, नक्सलवाद आदि अपशब्दों से हिनाया तथा उसे बड़ी बेरहमी से कुचला। " इन सबने जंगल को ' जंगली' होने का जो नकारात्मक अर्थ दिया है मेरी कविता उन सबका प्रत्युत्तर देने के लिए बेचैन रहती है।"[९] अतः इस अव्यवस्था की शल्य-चिकित्सा के लिए रीडा़ हड़म बिरसी को डोडे वैद्य के पास भेजते हैं। सुगना मुण्डा की बेटी के व्दितीय भाग में डोडे वैद्य तथा सात जन का चित्रण है। डोड़े वैद्य शोषणकारी व्यवस्था के शल्य-चिकित्सक हैं। सात जन मूलतः शोधार्थी है। इनमें चार स्त्री तथा तीन पुरुष हैं। जो स्त्री प्रधान सत्ता तथा सहजीवी व्यवस्था के प्रतीक हैं। इस धरती पर सब कुछ बना तथा बचा रहे इसलिए यह सात जन संघर्षशील हैं। डोडे वैद्य बंदई अमावस्या की रात शोधार्थियों को मंत्र की दीक्षा देते हैं। जिससे शोधार्थियों को अँधेरे मे शोषणकारी व्यवस्था की आकृतियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। अतः वे शोषणकारी व्यवस्था के अँधेरे के विरुध्द लडने के लिए संकल्पबध्द होते हैं। यहाँ कवि अनुज लुगुन पर मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' कविता का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है। "इस कविता में अँधेरे के कई चित्र हैं। यह कविता 'अँधेरे के साम्राज्य के समूल नाश', की कविता है। मुक्तिबोध की कविता 'अँधेरे में' के बाद हिंदी की बहुत कम लम्बी कविताओं मे अँधेरे का ऐसा चित्र और उसे दूर कर प्रकाश फैलाने की ऐसी बेचैनी और तडप है।"[१०] डोडे वैद्य सात जन, जीवन, अनुभव और ज्ञान के आधार पर सहजीविता तथा संघर्ष का सूत्र प्रदान करते हैं। सात जन संख्या सात दिनों की ओर संकेत करती है। वस्तुतः संवाद के बिना सहजीविता संभव नहीं। सहजीविता संवाद की नींव पर खडी है। संवाद,गीत,मंत्र और गणतंत्र एक दूसरे के पूरक है। अतः सहजीविता को लेकर मुक्ति पथ के जहरीले साँप, कीडें, कॉकरोज, रेत, दलदल, तूफान, विस्फोट, और भयावह स्थितियों से आसानी से लडा जा सकता है। डोडे वैद्य नयी सुबह के लिए व्यवस्था के विरुध्द लड़ने हेतु सहजीविता के महत्त्व को अधोरेखित करते हुए कहते हैं, -

"सहजीविता की समझ ही ज्ञान है
संवेदनाओं, अनुभूतियों की पहचान ही ज्ञान है
ज्ञान प्रतिस्पर्धा नहीं, प्रेम सीखाता है
प्रकृति और मनुष्य / मनुष्य और प्रकृति की सहजीविता
समूह में सम्भव है / उसे सींचना पडता है
अब यह तुम सब का दायित्व है कि
इसका बीजारोपण आगामी पीढ़ी में करो।"[११]

सात कथाएँ मूलतः शोषणकारी सत्ताओं के सात रुप हैं। जिसने आदिवासियों की सहजीविता के जीवन सूत्र को तहस-नहस किया। अतः हमें इन शोषणकारी व्यवस्था के सात रुपों से लडना है।

Scanned with CamScanner

१) साम्राज्यवादी सत्ता ने ' फूट डालो राज करो' की नीति अपनायी। जिसके तहत धर्म ,भाषा, पंथ, सम्प्रदाय, वर्ण, जाति आदि के आधार पर मानवता को बॉट कर समाज की एकता को छिन्न-भिन्न किया।

२) विज्ञापन की आभासी दुनिया जनता को वास्तविकता से दूर कल्पना लोक में ले गयी। बढ़ती भौतिकता के खुशनुमा मौसम में चीखने की आवाज विकास की व्यथा-कथा बयान करती है।

३) प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा कर सत्ताधारियों व्दारा उनका अमर्याद दोहन किया जा रहा है। देशहीत के नाम पर पानी की नीलामी हो रही है। ढ़ेचुवा पक्षी बढती धूप से पिघलती बर्फ और बढ़ते जलस्तर से चिंतित है। बढ़ती भौतिकता से पर्यावरण का विनाश हो रहा है।

४) धर्मसत्ता व्दारा इस देश के मूल निवासियों को जंगली, शूद्र, नीच कहकर अपमानित किया जाता है। भगवान हनुमान जी भी इसके अपवाद नहीं रहे।

५) साम्राज्यवादी शक्तियों ने युध्द सामग्री के बाजार को बढ़ावा दिया। परिणामतः हिरोशिमा-नागासाकी, ईरान, आफगाणिस्तान, इस्त्रायल, फिलिपाईन, सीरिया, कश्मीर, चीन, तिब्बत पर हुए अमानवीय हमलों से मनुष्यता विकलांग हुई। युध्द सामग्री के बाजार ने युध्द की विभीषिका को जन्म दिया। यहाँ कवि संवेदनात्मक स्तर पर वैश्विक स्थितियों से जुड जाता है।

६) राजसत्ता, सामंती सत्ता तथा पूँजीवादी सत्ता व्दारा श्रमजीवियों के श्रम का शोषण होता रहा है। कुतुबमीनार,ताजमहल, खजुराहों का निर्माण श्रमजीवियों की दास्तान बयान करते हैं। आज भी श्रमजीवी वर्ग दो जून की रोटी के लिए मोहताज है।

७) अंतिम शोधार्थी बिरसी स्त्री -पुरुष समानता तथा सहजीविता की पक्षधर होने से शोषणकारी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध करती है।

तृतीय भाग में शोषणकारी व्यवस्था की शल्य चिकित्सा की परीक्षा में सफल हुए परीक्षार्थी-शोधार्थियों के साथ बिरसी के नेतृत्व के उदय का चित्रण है। यह सात कथाएँ सदियों से संचित अनुभव एवं ज्ञान है। यह सभी कथाएँ सूत्र रुप में एक दूसरे के साथ अभिन्न रुप से जुडी हुई हैं। जो श्रम की सामूहिकता तथा सहजीविता को बयान करती है। अनुज लुगुन कहते हैं, -

"सात कथा, सात जीवन अभिन्न हैं
सूत्र एक - दूसरे के गूँथे हैं आपस में
एक के बिना दूसरे का अस्तित्व सम्भव नहीं है
गुरुत्वाकर्षण का केंद्र एक ही है -
श्रम और उत्पादन पर नियंत्रण / श्रम की सामूहिकता
और सहजीविता के तिरस्कार ने / जन्में हैं महामारी और कुप्रथा
ज्यो-ज्यों बढ़ी है अतिरिक्त की लालसा / बढ़ा है श्रम का शोषण
बढ़े है जगत में देवताओं और अवतारों की संख्या
पूँजी ने जन्में हैं फिर से नये अवतार ।"[१२]

आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति सामूहिकता तथा सहजीविता की समर्थक रही है। लेकिन अतिरिक्त लालसा की बेलगाम लहरों तथा विषाणुओं ने मनुष्य के भीतर प्रवेश कर उसे चानर-वानर उलट्बग्धा तथा बाघ बना दिया। इस अतिरिक्त लालसा से बने अप्राकृत बाघों ने ही आदिवासियों को उनके पुरखों के जल, जमीन और जंगल से बाहर खदेड़कर उनपर अमानवीय अत्याचार किये। अनुज लुगुन सत्ताधारियों के ईशारों पर काम करनेवाली लष्करी सत्ता की शोषण तथा दंडनीति को बयान करते हैं,-

"जमीन चाहिए तो सेना बुलाओ / नदी चाहिए तो सेना बुलाओ
जंगल चाहिए तो सेना बुलाओ / फूल चाहिए तो सेना बुलाओ .
जुगनू चाहिए तो सेना बुलाओ / इतना सैन्य संगठित है वह
कि स्त्री के गुप्तांगो तक में / ठोंकता है अपनी सत्ता
इतना चालाक है कि / वह स्त्रीलिंगो का करता है
पुल्लिंग रुपांतरण / पितृसत्ता का प्रचारक
सभी सत्ताओं का उद्गम ।"[१३]

इन सभी शोषणकारी सत्ताओं का उद्गम पुरुषसत्ता से हुआ है। हर सत्ता पर सदियों से पुरुष वर्ग का ही नियंत्रण रहा है। पितृसत्ता के विषाणु मुक्ति की राह में घातक होने से कवि अनुज लुगुन आदिवासियों की स्त्री प्रधान संस्कृति की ओर उन्मुख होते हैं। स्त्री शक्ति बिरसी के नेतृत्व में कवि को विश्वकल्याण की भावना साकार होती हुई दिखाई देती है। अनुज लुगुन कहते हैं,-

"तुम्हारे ही नेतृत्व में / होगा अस्मिताओं का उत्कर्ष
तुम्हारे प्रयोगों से ही होगा / साकार जन-मुक्ति का संघर्ष
जन संस्कृति होगी / जनवाद होगा
हजारो वर्षो से बाधित / सकल संवाद होगा
तुम्हारे ही हाथों विश्व को / रचना होगा मुक्ति गाथा ।"[१४]

चतुर्थ भाग में बिरसी के नेतृत्व में बहुजनों का संगठन, आदमखोर बाघ के विरुध्द विद्रोह तथा विजय ध्वनी का चित्रण है। सहजीविता के सूत्र पर आधारित समाज का नवनिर्माण करने हेतु बिरसी दलित -पिछड़े, आदिवासी, स्त्री शोषित जन, सर्वहारा वर्ग को संगठित करती है। बहुजनों को संगठित कर बिरसी के नेतृत्व में आदमखोर बाघ के विरुध्द युध्द का बिगुल बज चुका है। परिवर्तन की उम्मीद के साथ अनुज लुगुन कहते हैं,-

Scanned with CamScanner

"यह देश बहुजन का है / यह देश बहुजन का होगा
दलित-पिछड़े, आदिवासी, स्त्री / सब शोषित जन,सब सर्वहारा
अस्तित्व और अस्मिता के साथ / ऑंख तरेरेंगे आदमखोर को।"[१५]

स्त्री शक्ति तथा सत्ता की प्रतीक बिरसी के नेतृत्व में लड़े जानेवाले संघर्ष में शोषणकारी व्यवस्था की पराजय कवि को स्पष्ट दिखाई देती है । अत: उसे बहुजनों के समूह स्वर में उच्चरित विजय गीत सुनाई देते हैं।

सारांश :-

समकालीन हिंदी कविता के युवा कवि अनुज लुगुन ने अपनी लम्बी कविता 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के माध्यम से धर्मसत्ता, राजसत्ता, सामंती सत्ता, साम्राज्यवादी सत्ता, पूँजीवादी सत्ता तथा पितृसत्ता की शोषण चक्की में सदियों से पिसते आदिवासी समाज की व्यथा-कथा को बयान किया है। वैश्वीकरण से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति की अतिरिक्त लालसा ने मनुष्य को बाघ बना दिया। इन अप्राकृत बाघों के अमानवीय हमले, उससे जन्मी विस्थापन की समस्या, नक्सलवाद आदि का यथार्थ अंकन करते हुए अनुज लुगुन स्त्री प्रधान आदिवासी संस्कृति की सहजीविता की ओर उन्मुख होते हैं। सहजीविता के रास्ते पर चलकर ही शोषण से मुक्ति संभव है। अत: अनुज लुगुन 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के माध्यम से सहजीविता पर आधारित सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण हेतु प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२४
२) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.१५
३) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.३८
४) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.११
५) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ. ४४
६) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२३
७) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.२७
८) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.५२
९) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ .२७
१०) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२०
११) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.७६
१२) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.९७
१३) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ. ९९.१००
१४) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.१०२
१५) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.१०५

36

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श

प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम
हिंदी विभाग,कला व विज्ञान विभाग,
शिवाजी नगर गढी, गेवराई, बीड

****

हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से आदिवासियों के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों,रीति-रिवाजों,त्योहारों, लोकगीत,लोकनर्त्यि,लोककथाएँ,उत्सव,विवाह के तरिके साथ ही उनकी समस्याओं और संघर्ष को सशक्त रुप से व्यक्त किया है हिंदी लेखकों ने आदिवासी पुरुष व नारी दोनों के जीवन संघर्ष,नारी जीवन की पीड़ा, उनकी विषमता असमर्थता,उदारता,की भावना और तत्कालीन विषम परिस्थितियों का जीवंत अंकन अपनी रचनाओं में किया है, आदिवासी समाज तमाम संघर्ष,विषम परिस्थितियाँ और चुनौतियों से घिरा हुआ है जिसके कारण उसके अस्तित्व और अस्मिता पर गहरा संकट निर्माण हुआ है, इन्ही स्थितियों को देखकर हिंदी साहित्यकारों ने आदिवासी जीवन को कें, में रखकर उनकी लोक संस्क्ति, धर्म,दर्शन के साथ उनकी पीड़ा,संघर्ष को सफलतापूर्व व्यक्त किया है।

आदिवासी शब्द का शाब्दिक अर्थ है,प्रथम निवासी जो पहले से यहाँ रह रहे हो। आदिवासी को संविधान की पंचम् अनुसूची में 'जनजातियाँ` इस शब्द से परिभाषित किया है। पौराणिक कथाओं में भी उनके मानव समुदायों का उल्लेख है जो भारत में आर्यो के आगमन से पुर्व विद्यमान रहे हो, जिन्हें विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है जैसे असुर,दस्यु,निषाद किरात,राक्षस आदि।आदिवासी शब्द की उत्पत्ती हिंदी भाषा के दो शब्द आदि+वासी के मिलने से हूई है,जिसका अर्थ है मूल निवासी। आदिवासी मुख्यत: शहरों से दूर ग्रामीण परिवेश में रहते है। इन आदिवासीयों की समस्याओं,संघर्ष का सजीव चित्रण हिंदी साहित्यकारों ने किया है।

हिंदी साहित्य में आदिवासीयों का आजादी पूर्व और आजादी के बाद की परिस्थिती,समस्या संघर्ष को चित्रित किया है। आदिवासीयों के स्वतंत्रता के पहले की समस्या है वनोपज पर प्रतिबंध,तरह-तरह के लगान,महाजनी शोषण,पुलिस प्रशासन की जातियाँ आदि और स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा अपनाए गए विकास कार्यक्रम में

Scanned with CamScanner